पदच्छेदः ।

तेषाम्, असौ, विरजः, ब्रह्मलोकः, न, येषु, जिह्मम्, अनृतम्, न, माया, च, इति ॥

अन्वयः	पदार्थ	अन्वयः	पदार्थ
च	और	असौ	यह पूर्वोक्त
येषु	जिन पुरुषों विषे	विरजः	रोगादि दोषों से रहित
जिह्मम्	कुटिलता	ब्रह्मलोकः	उत्तरायण मार्गरूपी सूर्यलोक
न	नहीं है	+ भवति	प्राप्त होता है
च	और	इति	प्रथम प्रश्न की समाप्ति है
अनृतम्	असत्यता		
न	नहीं है		
तेषाम्	उन पुरुषों को		

भावार्थ ।

तेषामिति । पूर्व के मंत्र में केवल कर्मियों को चन्द्रलोक की प्राप्ति कही है, अब इस मंत्र में ज्ञान के सहित कर्मियों को जो फल प्राप्त होता है उसको कहते हैं ॥ तेषामिति ॥ जिन उपासकों में कुटिलता, असत्य भाषणता, और छल प्रपञ्चता भीतर बाहर से नहीं है, और हिंसा, चोरी आदि दुष्टकर्म नहीं हैं, उन निष्काम कर्मियों को उत्तरायण मार्ग करके वृद्धि क्षयरहित ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है ॥ १६ ॥

इति प्रथमः प्रश्नः ॥ १ ॥

मूलम् ।

अथ हैनं भार्गवो वैदर्भिः पप्रच्छ भगवन् कत्येव देवाः प्रजां विधारयन्ते कतर एतत् प्रकाशयन्ते कः पुनरेषां वरिष्ठ इति ॥ २ ॥

पदच्छेदः ।

अथ, ह, एनम्, भार्गवः, वैदर्भिः, पप्रच्छ, भगवन्, कति, एव,

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/jalimasimha1930/0029
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG